BA Part II (S)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ college Rajnagar

संस्कृतिकरण (Sanskritization) ⇒ संस्कृतिकरण की अवधारणा का विकास प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम.एन श्रीनिवास ने किया, संस्कृतिकरण की अवधारणा सामाजिक परिवर्तन के विश्लेषण के सन्दर्भ में किया गया है। संस्कृतिकरण की अवधारणा के द्वारा समाज में होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट करने का प्रयास किया। मैसूर के रामपुरा ग्राम के अध्ययन करते समय इस अवधारणा का विकास किया।

एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण को स्पष्ट करते हुए लिखा है," यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा निम्न हिन्दू जातियां या जनजातीय समूह उच्च अथवा द्विज कही जाने वाली जातियों की दिशा में अपनी प्रथाओं संस्कारों विचारों तथा जीवनशैली को बदलने का प्रयत्न करती है। संस्कृतिकरण समाज के सांस्कृतिक प्रतिमान के संदर्भ में अर्थात् स्थानीय प्रभु जाति के सन्दर्भ में सामाजिक गतिशीलता का एक आन्दोलन है।"

संस्कृतिकरण के द्वारा निम्न जातियां उच्च जातियों के जीवन प्रतिमानों एवं विश्वासों को इसलिए अंगीकार करती है ताकि सामाजिक संस्तरण में वे अपनी सामाजिक

स्थिति को ऊँचा उठा सके। वे उन आदतों एवं संस्कारों को त्यागने का प्रयास करते हैं जिन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है, जैसे मांस खाना, शराब पीना आदि।

ग्रामीण भारतीय जीवन की आधारशिला कृषि पर आधारित रही है। कृषि पर आधारित जाति व्यवस्था का एक निश्चित प्रतिमान था। ब्रिटिश शासन व्यवस्था से पूर्व जाति में किसी तरह का स्पष्ट परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता। औद्योगीकरण के फलस्वरूप उद्योग-धन्धों का विकास धीरे-धीरे होने लगा, फलस्वरूप तकनीकी तथा आधुनिक शिक्षा ने जाति व्यवस्था को प्रभावित करना प्रारम्भ किया। जातियों में जो सेवा का कार्य करती थी उन्हें निम्न जाति माना जाता था। निम्न जातियों ने चेतना के फलस्वरूप वे उच्च अथवा द्विज जातियों की जीवन शैली, संस्कृति, परम्परा आदि को अपनाने लगे और कुछ पीढ़ी बाद अपने को उच्च जाति के रूप में प्रस्तुत किया और अपने को उच्च जाति में स्थान पाने में सफलता प्राप्त की। इसी प्रक्रिया को एम. एन श्रीनिवास ने 'संस्कृतिकरण' कहा।

संस्कृतिकरण की अवधारणा को पहले ब्राह्मणीकरण कहा गया क्योंकि जब वे अध्ययन कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुछ लिंगायत जो कि वैश्यकर्मी को अपना इष्टदेव मानते थे, वे ब्राह्मणों की सभ्यता और संस्कृति को अपना रहे थे। यह

(i) ब्राह्मणों की भांति वे जनेऊ धारण करने लगे।
(ii) मांस मदिरा का सेवन बंद कर दिया।
(iii) विधवा पुनर्विवाह पर रोक लगा दी।
(iv) बाल विवाह करने लगे।

ऐसा वे लोग इसलिए करने लगे क्योंकि वे उच्च जाति में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे थे।

प्रोफेसर योगेन्द्र सिंह ने संस्कृतिकरण की अवधारणा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि इस अवधारणा के दो पक्ष हैं —

(i) ऐतिहासिक - इस संदर्भ में भारतीय समाज के इतिहास में ~~संस्कृतिक~~ संस्कृतिकरण सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया है।

(ii) संदर्भात्मक — इस संदर्भ में सापेक्षिक भाव संस्कृतिकरण परिवर्तन की प्रक्रिया है।

संस्कृतिकरण की विशेषताएं => संस्कृतिकरण की विशेषताएं इस प्रकार हैं —

(1) संस्कृतिकरण का संबंध निम्न जातियों से है, अर्थात प्रायः निम्न जातियां ही अपने से उच्च प्रायः द्विज जातियों या प्रभु जातियों का अनुसरण करती हैं।

(2) यह सामाजिक गतिशीलता को प्रकट करने वाली प्रक्रिया है। इसमें कोई निम्न जातीय समूह अपने से उच्च जातीय समूह की ओर गतिशील होते हैं तथा उसके स्थान को प्राप्त करना चाहते हैं।

(3) यह प्रक्रिया हिंदू जातियों तक ही सीमित न होकर जनजातियों और अर्द्ध जनजातीय समूहों में भी पाया जाता है।

(4) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का संबंध किसी एक व्यक्ति या कुछ परिवारों से नहीं बल्कि एक समूह से है।

(5) संस्कृतिकरण के कई आदर्श हो सकते हैं जैसे ब्राह्मण या कोई प्रभु जाति को आदर्श मानकर निम्न जातियां उनका अनुसरण करती हैं।

(6) इस प्रक्रिया द्वारा उच्च जाति के मूल्यों, विचारों, कर्मकाण्डों, संस्कृति, परम्परा आदि को अपनाया जाता है।

(7) संस्कृतिकरण की प्रक्रिया एक सर्वकालिक प्रक्रिया है जो भारतीय इतिहास के प्रत्येक काल में दिखाई देती है।

(8) इस प्रक्रिया द्वारा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता है एक निम्न जाति दो या तीन पीढ़ी पहले से ही अपना संबंध उच्च जाति से जोड़ती है।

(9) यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है।

(10) यह विचारधारा को ग्रहण करने वाली प्रक्रिया है।

∴ एम. एन. श्रीनिवास की संस्कृतिकरण की अवधारणा आधुनिक समाज में हो रहे परिवर्तन के अध्ययन में भी स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है।